कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़ें, ए खेल या सनंध।। २८ ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इसी तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे।। २९ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३० ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे अंग वाले तथा अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में आनन्द हो रहा है।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत।। ३१ ।।

कई अपने पेट के वास्ते मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब झंझट है।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

खेल में खेल

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए।
भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं अब तुमको इस तरह से दिखाती हूं जिससे तुम्हें सब समझ आ जाए। यहां सत (परब्रह्म) और झूठ (माया) को लोगों ने इकट्ठा समझ रखा है, उन दोनों सत और असत को जुदा-जुदा करके दिखाती हूं।

इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। २ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह बेशुमार है और कहनी (वर्णन) से परे है। विभिन्न भेषों में तरह-तरह के भेष दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई द्योहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ३ ।।

यहां पर कई मन्दिर, कई जैन मन्दिर और कई मुसलमानों की मीनारों वाली मस्जिदें हैं। कई तालाब, कुण्ड, बावरी और तीर्थ स्थान हैं, कई धर्मशालाएं हैं। इस तरह धर्मों की रस्में हैं।

Nijanand App

कई भेख जो साध कहावें, कई पंडित पुरान।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान।।४।।

कई ऐसे भेष पहनते हैं कि लोग उन्हें साधु कहते हैं। कई पुराण पढ़ने वाले पण्डितों का भेष धारण करते हैं। कई डाकुओं का भेष धारण करते हैं। कई मूर्ख नासमझ घूमते रहते हैं।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान।।५।।

कई अन्न क्षेत्र खोलते हैं। कई प्याऊ बनवाते हैं। कई दया तथा दान करते हैं। कई तीर्थों में जाकर पिण्डों का तर्पण (पिण्डदान) करते हैं। कई जाकर तीर्थों में नहाते हैं।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख।
सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेख।।६।।

कई दर्शन-शास्त्र के ज्ञाता कहलाते हैं। वह अलग भेष धरते हैं। उन्हें न अपनी खबर है और न ब्रह्माण्ड के पार की खबर है। उनका हृदय अंधेरे से भरा हुआ है।

कई लूचे कई मूंड़े, कई बढ़ावें केस।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस।।७।।

कई बालों को नुचवाते हैं, कई मुंडवाते हैं, कई लोग केश बढ़ाते हैं। कई काले हैं। कई गोरे हैं। कई भगवा भेष धारण करके घूमते हैं।

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बोहोत फारें कान।
कई माला तिलक धोती, कई धरें बैठे ध्यान।।८।।

कई कान छेदते हैं, कई नहीं छेदते हैं, कई कानों को बहुत फाड़ते हैं, कई माला पहनते हैं, कई धोती पहनते हैं, कई ध्यानी होकर बैठते हैं।

कई जिंदे मलंग मुल्ला, कई बांग दे मन धीर।
कई जावें पाक होए, कई मीर पीर फकीर।।९।।

कई इस्लाम धर्म के अन्दर जिन्दे, मलंग, मुल्ला (यह उनके महात्माओं की उपाधियां हैं) हैं। कई मस्जिद की मीनारों पर बांग देकर मन को शान्ति देते हैं। कई शरीर के चौदह अंग धोकर अपने को पवित्र बनाना समझते हैं। कई मीर, पीर और फकीरों का भेष बनाकर अपने को जीव, हंस और परमहंस समझ बैठे हैं।

कई लंगरी बोदले, कई आलम पढ़े इलम।
कई ओलिए बेकैद सोफी, पर छोड़े नहीं जुलम।।१०।।

कई लंगरी तथा बोदले हैं। कई इल्म पढ़कर आलिम कहलाते हैं। कई तपस्वी शरीयत से ऊपर उठकर सूफी कहलाते हैं, पर माया से मन को हटा नहीं सके। केवल माया के स्वांगों के वास्ते सब बनाए हैं।

कई सती सीलवंती, कई आरजा अरधांग।
जती बरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।।११।।

कई शीलवन्ती, कई सती कहलाती हैं। कई पतिव्रता अर्द्धांगिनी कहलाती हैं। कई यती हैं। कई व्रती हैं। कई नशा करने वाले हैं। इसी तरह से सब रूप दिखाई पड़ते हैं।

Nijanand App

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमे, पर छूटे नहीं जमफांस।। १२ ।।

कई तरह के योगी हैं। कई तरह के संन्यासी हैं। कई विभिन्न तरीकों से देह दमन करते हैं। कई चलते फिरते योगी हैं। पर किसी से यम की फन्द नहीं छूटती है। सब माया में उलझे पड़े हैं।

कई सिवी कई वैष्नवी, कई साखी समरथ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ।। १३ ।।

कई शिव को मानने वाले (शैव) हैं। कई विष्णु के उपासक हैं। कई कविता लिखने वाले सन्त कवि हैं। यह सब अपने अहंकार में डूबे हुए माया का ही खेल खेल रहे हैं।

कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदान्त।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिद्धांत।। १४ ।।

कई श्रीपाद (पूज्यपाद) ब्रह्मचारी हैं। कई वेद पढ़ने वाले वेदान्ती हैं। कई पुस्तक पढ़ते-पढ़ते परमहंसों के सिद्धान्त तक पहुंचते हैं।

कई अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल।। १५ ।।

कई विष्णु के अवतार हुए हैं। कई जैन मत के तीर्थंकर हुए हैं। कई देव और कई शक्तिशाली दानव हैं। कई बड़े ज्ञानी कहलाते हैं, पर किसी को माया ने नहीं छोड़ा।

कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड।
बिना हिसाबें खेलहीं, जाहेर छल पाखंड।। १६ ।।

कई यहूदी हैं। कई बौधी हैं। कई पादरी हैं (यह ईसाई मत के सन्त हैं)। कई चण्डी देवी के उपासक हैं। कई चामुण्डा के उपासक हैं। इस तरह से बिना हिसाब के लोग इसमें खेलते हैं, पर यह छल और पाखण्ड है।

कई डिम्भ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान।। १७ ।।

कई पाखण्डी करामाती हैं। कई यन्त्र, मन्त्र, मसान की पूजा करते हैं। कई साधु जड़ी-बूटी की औषधि देकर कई रस तथा धातु की गोलियां बांटते हैं।

कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन।
कई मठ वाले पिंड पालें, कई फिरें होए नगिन।। १८ ।।

कई सिद्ध और साधक बनकर घूमते हैं। कई व्रत धारण करके मौन रहते हैं। कई मठाधीश बनकर पिण्ड पालते हैं। कई जैन मुनि बनकर नंगे घूमते हैं।

कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द।। १९ ।।

कई षट चक्रों से नाड़ी शोधन करते हैं। कई अजपा, अनहद का जाप करते हैं, कई चित्त को त्रिकुटि में स्थिर करते हैं और ज्योति स्वरूप ओउम्-सोऽहं शब्दों का आनन्द लेते हैं।

Nijanand App

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगम्बर।
पर छल ना छोड़े काहू को, कई कापड़ी कलंदर।। २० ।।

कई सन्त हैं। कई महन्त हैं। कई नंगे हैं। कई श्वेताम्बर जैन हैं, कई कलंदर हैं पर माया ने किसी को नहीं छोड़ा।

कई आचारी अप्रसी, कई करें कीरतन।
यों खेलें जुदे जुदे, सब परे बस मन।। २१ ।।

कई आचार-विचार वाले हैं। कई छूतछात को मानने वाले हैं। कई कीर्तन करने वाले हैं। यह सब लोग अलग-अलग रूप से मन के वशीभूत होकर खेलते हैं।

कई कीरतन करें बैठे, कई जाग जगन।
कई कथें ब्रह्मग्यान, कई तपें पंच अगिन।। २२ ।।

कई बैठे-बैठे कीर्तन करते हैं। कई रात्रि जागरण करते हैं। कई ब्रह्मज्ञान का कथन करते हैं। कई पांच तरह की अग्नि में अपने को तपाते हैं।

कई इन्द्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह।
कई उर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए।। २३ ।।

कई इन्द्रियों को वश में करते हैं। कई लोग मोह के वश में कष्ट उठाते हैं। कई उलटे खड़े रहते हैं। कई खुद को ही ब्रह्म कहलाते हैं।

कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंड पाओस।। २४ ।।

कई देश-विदेश में घूमते हैं। कई काओस (ओस में बैठकर उपासना करने वाले), कई कापालिक (मुर्दे की खोपड़ी लेकर घूमने वाले), कई अघोरी हैं। कोई मलेच्छ खाना खाते हैं। कई ठण्ड के मौसम में छाती तक पानी में डूबे रहते हैं।

कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन।। २५ ।।

कई हवा खाते हैं। कई दूध पीते हैं तथा नियम पालन करते हैं। कई कर्मकाण्ड करते हैं। कई कुछ नहीं करते। यह सब छल और कपट के चरित्र हैं।

कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप।। २६ ।।

कई फल खाते हैं। कई फूल खाते हैं। कई पत्ते खाने वाले हैं। कई थोड़ा खाने वाले हैं। कई काल की साधना करके मरना नहीं चाहते हैं, और कल्पान्त तक जीना चाहते हैं।

कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन।
कई सूके बिना खाए, कई करे पिंड पतन।। २७ ।।

कई पानी की धारा के नीचे बैठे हैं। कई बर्फ में अपने तन को गला रहे हैं। कई भूखों मरकर सूख रहे हैं। कई इस तरह अपने शरीर को नष्ट करने में लगे हैं।

Nijanand App

यों वैराग जो साधना, करें जुदे जुदे उपचार।
यों चले सब पंथ पैंड़े, यों खेले सब संसार।। २८ ।।

कई वैराग्य साधना करते हैं। कई तरह-तरह के उपचारों में लगे हैं (दवाई ढूंढ़ते फिरते हैं)। इसी तरह से सभी पन्थ पैंड़े चल रहे हैं। इन पर चलकर संसार में खेल खेल रहे हैं।

खेलें सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाएं कतार।। २९ ।।

यह सब चींटियों की कतार की तरह देखा-देखी चलते हैं। इस तरह से यह अन्धे गफलत में डूबे हुए एक कतार में चले जा रहे हैं।

कोई ना चीन्हें आप को, ना चीन्हें अपनो घर।
जिमी पैंड़ा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर।। ३० ।।

किसी को न अपनी पहचान है न घर की पहचान है। किसी को भी इस भवसागर से पार जाने का रास्ता दिखता नहीं है, पर चले जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३१ ।।

इस संसार के रचने वाले बाजीगर की पहचान नहीं है और ये सब खेल के कबूतर की तरह खेल रहे हैं। जैसे खेल के कबूतरों को बाजीगर की पहचान नहीं होती, इसी प्रकार इनको परब्रह्म की पहचान नहीं है।

अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाब।
आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब।। ३२ ।।

अब हकीकत के मायने लेकर देखो तो यह खेल बिना हिसाब चल रहे हैं। अब आप यदि तारतम वाणी से देखें तो श्री राजजी ने ऐसा स्वप्न का खेल बनाया है।

धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक।
अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध खेलें विवेक।। ३३ ।।

इन्होंने अपनी ही तरफ से परमात्मा के अनेक नाम रख लिए हैं तथा अनेक तरह से आपस में वाद विवाद (शास्त्रार्थ) करते हैं।

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। ३४ ।।

इस बात का विचार वही करेगा जो स्वयं सच्चा होगा, अर्थात् जिसको परब्रह्म की पहचान हो गई होगी कि परमात्मा जिसको कहते हैं वह सबका एक ही है।

खेल खेलें अनेक रब्दें, मिनों मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े न कोई व्रोध।। ३५ ।।

इस खेल में खेलते हैं और आपस में क्रोधित होकर झगड़ा करते हैं। जिस तरह मगरमच्छ आपस की दुश्मनी नहीं छोड़ते, वही हाल इनका है।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३४५ ।।

Nijanand App